विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ, लखिसराय ।

वर्ग – षष्ठ

विषय – संस्कृत। विषय शिक्षिका – भारती कुमारी

दिनांक – 21/05/2020

सुप्रभात बच्चों कल आप लोगों ने व्याकरण के वर्ण – विचार के बारे में पढ़कर जाना ।

आज हम लोग उससे आगे व्यंजन (जीसे संस्कृत में हल् कहते हैं) के बारे में पठेंगे ।

## व्यञ्जन

वे वर्ण जिन्हें उच्चारित करने के लिए स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है , **व्यञ्जन** कहलाते हैं।

स्वर - रहित व्यञ्जन को दर्शाने के लिए उसके नीचे दाईं ओर एक तिरछी रेखा खींच दी जाती है , जिसे **हलन्त** कहते हैं ;

जैसे – क् , ख् , च् , म् इत्यादि।

संस्कृत वर्णमाला में **33** व्यञ्जन हैं।

**व्यञ्जन के भेद** :-

**स्पर्श व्यञ्जन** :- जिन्हें उच्चारित करते समय जीभ मुख के किसी भी भाग का पूर्ण रूप से स्पर्श करती है।

**'क् ' से ' म् '** तक के वर्ण ' **स्पर्श** ' कहलाते हैं।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **कवर्ग** | **क्** | **ख्** | **ग्** | **घ्** | **ङ्** |
| **चवर्ग** | **च्** | **छ्** | **ज्** | **झ्** | **ञ्** |
| **टवर्ग** | **ट्** | **ठ्** | **ड्** | **ढ्** | **ण्** |
| **तवर्ग** | **त्** | **थ्** | **द्** | **ध्** | **न्** |
| **पवर्ग** | **प्** | **फ्** | **ब्** | **भ्** | **म्** |

**ऊष्म व्यञ्जन** :- जिन्हें उच्चारित करते समय वायु घर्षण के साथ गर्म होकर बाहर निकलती है।

**'श् , ष् , स् तथा ह् '** ऊष्म वर्ण हैं।

**अन्तःस्थ व्यञ्जन :-** जिनके उच्चारण के समय जीभ मुख के किसी भाग को थोड़ा – सा स्पर्श करती है तथा वायु थोड़ा सा अन्दर रुककर कम शक्ति के साथ बाहर निकलती है। **‘ य् , र् , ल् तथा व् अन्तःस्थ वर्ण हैं।**

**आयोगवाह**

**अनुस्वार तथा विसर्ग** को आयोगवाह कहते हैं। ये अधूरे वर्ण होते हैं।

जैसे :- अंत , रामः इत्यादि।